निराला साहित्य में हाशिए का समाज –स्त्री, दलित, पिछड़ा, एवं अन्य

डॉ0 विवेक सिंह

प्रवक्ता–हिन्दी

डायट,भदोही,उ.प्र

छायावदी काव्यान्दोलन का उदय नव जागरण काल की बेला में हुआ। उस समय देश में सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय धरातल पर एक नयी क्रांति का सूत्रपात हो चुका था। भारतीय जनमानस में छायावाद या स्वच्छन्दतावाद के उदय से पूर्व आध्यात्मिक एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का प्रणयन श्री अरविन्द, रानाडे, राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानन्द, स्वामी रामतीर्थ, विवेकानन्द, टैगोर, एवं गांधी आदि के द्वारा प्रारम्भ हो चुका था। अपने युग की चेतना से कवि स्वतः प्रेरणा प्राप्त करता है। कवि निराला पर अपने युग का प्रभाव तो पड़ा ही, साथ में रामकृष्ण मिशन से बहुत साल तक सम्बद्ध रहने के कारण मिशन की विचारधारा का विशेषकर स्वामी विवेकानन्द के ओजपूर्ण व्यक्तित्व का अधिक प्रभाव पड़ा। यही कारण है उनका काव्य राष्ट्रीय सांस्कृतिक नवजागरण का प्रभावी काव्य माना जाता है।

निराला की प्रारंभिक रचनाओं में अध्यात्म के प्रति गहरी आस्था दिखाई देती है। उनकी 'तुम और मै' कविता की रचना यद्यपि अद्वैत दर्शन की पीठिका पर की गयी है किन्तु साथ–साथ कवि की सांस्कृतिक–सामाजिक भावना स्पष्टतया देखी जा सकती है। गीतिका, राम की शक्ति पूजा एवं तुलसीदास ने निराला की सांस्कृतिक एवं सामाजिक रूचि का विशेष परिचय प्राप्त होता है। मां भारती के गौरवपूर्ण रूप को कवि ने जिस आस्था के साथ प्रस्तुत किया है वह अपने में एक प्रार्थना का ही रूप है –

भारति जय विजय करे

कनक शस्य कमल धरे।

लंका पद तल–शत दल

गर्जितोर्मि सागर जल

धोता शुचि चरण युगल

स्तव कर बहु अर्थ भरे।"

कवि जब भी संस्कृति के समुज्जवल एवं उन्नतपक्ष का उद्घाटन करता है तब उसमें राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन स्वतः ही समाए रहते हैं क्योंकि संस्कृति का अपने राष्ट्र एवं समाज से गहरा एवं अटूट सम्बन्ध होता हे। निराला 'जागरण' का महामंत्र फूंकते है तो वह एकांशी न होकर सम्पूर्ण अर्थ में ही जागरण होता है। 'जागो फिर एक बार' में निराला ने भारत वासियों को जागृत करते हुए कहा है –

"तुम हो महान तुम सदा महान्

है नश्वर यह दीन भाव

कायरता, पामरता,

ब्रम्ह हो तुम

पद रजभी है नही

पूरा यह विश्वभार

जागो फिर एक बार।"

सामाजिक नव जागरण की दृष्टि से निराला काव्य का वह अंश महत्वपूर्ण है जहां उन्होंने समाज में फैली रूढ़ियों और विसंगतियों पर गहरी चोट की है। ऐसे में निराला का स्वर विद्रोही रूप अपना लेता है। एक जागरूक कलाकार होने के नाते कवि को अपने समाज का पतनोन्मुखी स्थिति देखकर मार्मिक पीड़ा अनुभव होती है। 'सरोज स्मृति' में कवि की इस पीड़ा को देखा जा सकता है जहां कवि जाति के संकीर्ण बंधनों पर प्रहार करता है –

सोचा मन में हम बार–बार

"ये कान्यकुब्ज – कुल कुलांगार

खाकर पत्तल में करें छेद

इनके घर कन्या अर्थ खेद

इस विषय बेलि में विष ही फल

यह दग्ध मरूस्थल, नही सुजल।"

निराला काव्य की सम्वेदना में व्यंग्य और आक्रोश का भाव बड़े पैने रूप में व्यक्त किया गया है। सामाजिक विषमताओं के प्रति निराला सदैव विद्रोही रहे हैं। निराला को 'महाप्राण' की उपाधि से साहित्य जगत ने सम्मानित किया। उनके महाप्राण होने की प्रमाणिकता व्यंग्य एवं आक्रोश के गहरे मर्मस्पर्शी रूपों में मिलती है। निराला की संवेदना वह पारस है जिसके स्पर्श मात्र से जगती के सम विषम भाव सवर्ण के समान अमूल्य बन जाते हैं। कुकुरमुत्ता, गर्म पकाड़ी, बादल राग, दौड़ते है बादल यह काले काले, कुत्ता भौकने लगा, दगा की, घोड़ी के पेटों में बहुलों को आना पड़ा, डिप्टी साहब आए, झींगुर डर कर बोला, मंहगू महंगा रहा, जैसी रचनाओं में व्यंग्यात्मकता का हास्य एवं आक्रोश जनित रूप काफी सशक्त बन पड़ा है। हास्य व्यंग्य का निम्न रूप निराला के उसी भाव को साकार करता है –

जमींदार का सिपाही लट्का कंधे पर डाले

आया और लोगों की तरफ देखकर कहा,

"डेरे पर थानेदार आए हैं

डिप्टी साहब ने चंदा लगाया है

एक हफ्ते के अंदर देना है

चलो बात दे आओ।"

देखा जाए तो निराला की काव्य संवेदना इतनी विराट एवं विस्तृत है कि उसमें उच्च से उच्च भावभूमि एवं निम्न से निम्न क्षुद्र अंश तक समाया है। छायावादी काव्य वस्तु के सभी प्रमुख तत्व भी उसमें समाए है। और आधुनिक कविता के समस्त नए–नए प्रयोगों की भावभूमि भी उसी में समाविष्ट है। नारी जीवन के प्रति करूण एवं सम्मान का भाव, प्रेम की निश्चल अभिव्यक्ति, प्रकृति के विभिन्न रूपों की भावपूर्ण प्रस्तुति, मानवतावादी दृष्टि, सर्वमंगल की कामना, परमात्मा के प्रति अटूट विश्वास, जीवन की नश्वरता का बोध, सौन्दर्यानुभूति के साथ–साथ रहस्यानुभूति के अनेक भाव निराला की काव्य संवेदना में भरे पड़े है।

निराला क्रांतिकारी कवि है। सामाजिक रूढ़ियों एवं विषमताओं के प्रति उनकी निर्भीक वाणी ने सदैव चोट की है। निरन्तर दुख एवं अवसाद को भोगते हुए निराला टूटे नही अपितु सामाजिक जीवन की दलित मान्यताओं और अन्याय के प्रति अपने विद्रोही स्वर द्वारा तीखी चोट करते रहे। विद्रोह का स्वर निराला की प्रयोगवादी कविताओं में साकार है। बादल राग कविता में विप्लव एवं विद्रोह का भाव चरम सीमा पर प्रतिष्ठित है।

'कण' कविता में कवि त्रस्त मानवता को पीड़ित देखकर कह उठता है –

"पड़े हुए सहते हो अत्याचार,

पद पर रूढ़ियों के पद प्रहार।"

रूढ़ियों का खण्डन करते हुए निराला आक्रोश युक्त वाणी में प्रेरणा का महामंत्र फूंकते हुए कहते हैं –

"जला दे जीर्ण शीर्ण प्राचीन,

क्या करूंगा तन जीवन हीन।"

रूढ़ि विरोधी होने के कारण ही उन्होंने काव्य क्षेत्र में मुक्त छन्द का प्रयोग प्रारम्भ किया था इस विषय में निम्नांकित उद्‌गार व्यक्त किए थे – "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्य की मुक्ति कर्मो के बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग होना। मुक्त छनद में 'ब्रम्ह समता के प्रति कविता में जो अतुल आग्रह होता है वह समाप्त हो जाता है। मुक्तछन्द में सिर्फ आन्तरिक साम्य होता है जो उनके प्रवाह में सुरक्षित रहता है।"

इसी प्रकार अपनी पुरातन संस्कृति पर मिथ्या दम करने वालों को ललकारते हुए निराला न लिखा है –

"हजार वर्ष से सलाम ठोकते–ठोकते नाक मे दम हो गया, अपनी संस्कृति लिए फिरते हैं। ऐसे लोग संसार की तरफ से आंखें बन्दकर अपने ही बिबर में ब्याघ्र बन बैठे रहते हैं, अपनी ही दिशा के ऊंट बनकर चलते है।

'सरोजस्मृति' शीर्षक कविता में पुत्री के श्रृंगार का वर्णन करना एक प्रकार से रूढ़ि का विद्रोह करना ही था। लोकरीति को तोड़ने की बात इस कविता में कही गयी है –

फिर सोचा मेरे पूर्वजगण

गुजरे जिस राह वही शोभन

होगा मुझको यह लोकरीति

उन्होंने सन् 1920 में 'बादल राग' कविता लिखकर कृषकों की दयनीय दशा की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है –

"जीर्ण वाहु है शीर्ण शरीरी

तुझे बुलाता कृषक अधीर

ऐ विप्लव के वीर

चूस लिया है उसका सार

हाड़ मात्र ही है आधार

ऐ जीवन के पारावार।"

मजदूरी की दयनीय दशा का सबाक् चित्र अंकित करने में भी निराला ने सूक्ष्मतापूर्वक अवलोकन किया है –

"वह तोड़ती पत्थर

देखा मैंने इलाहाबाद के पथ पर।

नहीं छायादार पेड़

वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार

श्यामतन, भरवंधा यौवन

नतनयन प्रिय कर्मरत मन

गुरू हथौड़ा हाथ

करती बार–बार प्रहार

सामने तरू मालिका, अट्‌टालिका आकार।"

वर्ग वैषम्य की भावना को उभारने की दृष्टि से कवि मजदूरनी की दशा का चित्रण करते हुए सामने दिखायी पड़ने वाली अट्टालिकाओं की ओर संकेत करना नही भूलता। इसी प्रकार भिखारी के चित्रण में कवि ने अपने अन्तर्मन की पूरी संवेदना उड़ेल दी है –

"वह आता

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक

चल रहा लकुटिया टेक

मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को

मुह फटी पुरानी झोली को फैलाता

दो टूक कलेजे को करता, पछताता पथ पर आता।"

भिक्षुकों के बच्चों की कैसी दर्दनाक दुरावस्था होती हैं इस तथ्य का भी कवि ने बड़ा मार्मिक चित्रण किया है –

" साथ दो बच्चे भी है सदा हाथ फैलाए

बाएं से वे मलते हुए पैर को चलते

और दाहिना दयादृष्टि पाने की ओर बढ़ाए

भूख से सूख होंठ जब जाते

दाता भाग्य विधाता से क्या पाते ?

घूंट आंसुओं के पीकर रह जाते।

चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए

और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी है अड़े हुए।"

पूँजीपतियों को ललकारते हुए निराला ने प्रचुर मात्रा में विरोधी भाव व्यक्त किए है। बादल राग में भी जहां कवि ने पूँजीपतियों को अपनी प्रियतनाओं के शरीरांगो से चिपके होने पर भी थर–2 कांपते चित्रित किया है उसमें कवि की उसमें कवि की पूँजीपति वर्ग के प्रति घृणा ही व्यक्त हो रही हैं।

भेद कुल खुल जाय वह सूरत हमारे दिल में है।

देश को मिल जाय तो पूँजी तुम्हारे मिल में है।"

समाज के शोषक के प्रति उनका आक्रोश 'कुकुरमुत्ता' में चरम सीमा पर पहुंच जाता है –

" अबे सुन वे गुलाब

भूल मत गर पायी खुशबू रंगों आब

खून–चूसा खाद का तूने अशिष्ट

डाल कर इतरा रहा है

कैपिटलिस्ट।"

कवि की निधि है–संवेदना प्रवण हृदय। जिसमें अनगिनत भावनाओं का विशाल रूप निवास करता है। सौन्दर्यानुभूति तो कवि की दृष्टि और हृदय में रहती है। कवि निराला के पास सूक्ष्म अनुभूति की वह सामर्थ्य है जो सृष्टि के नाना उपकरणों में सौन्दर्य का दर्शन करती है निराला नारी सौन्दर्य का अंकन करते हुए कहते है –

(1) **"शिखालखण्ड पर बैठी वह, नीलांचल मृदु लहराता था –**

मुक्त बन्ध सन्ध्या–समीर सुन्दर संग

कुछ चुपचाप बातें करता जाता और मुस्कराता था।"

(2) **"यौवन के तीर पर प्रथम था आया जब स्रोत सौन्दर्य का**

बीचियों में रूलख सुख चुम्बित प्रणय का,

था मधुर आकर्षण मय –

मज्जना वेदन मृदुफूटता सागर में।"

बसुधा – सुंदरी का निम्नलिखित चित्रण द्रष्टव्य है –

"वर्ष का प्रथम

पृथ्वी के उठे उरोज मंजु पर्वत निरूपम

किसलयो बंधे।"

चूसता रसा को बार–बार चुम्बित दिनकर

क्षोभ से, लाभ से, ममता से

उत्कंठा से, प्रणय के नयन की समता से

सर्वस्व दान

देकर, लेकर सर्वस्व प्रिया का सुकृत मान।"

भारतीय विधवाओं की दयनीय दशा का जितना मार्मिक चित्रण निराला ने किया है वह अनुपमेय है –

वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा सी

वह दीपशिखा सी शांत भाव में लीन

वह क्रूर काल तांडव की स्मृति रेखा सी

वह टूटे तरू की धुरी लता सी दीन

दलित भारत की ही विधवा है।"

उपर्युक्त विवेचना के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि निराला के विराट व्यक्तित्व के सामने मूल्यांकन के सारे मानदण्ड बौने रह जाते है। निराला का बादल के समान विराट व्यक्तित्व है जो दूसरे के लिए रिक्त होना जानता है। निराला के वैयक्तिक का निर्माण विषम परिस्थितियों से निर्मित है। आजीवन उन्हें संघर्ष करना पड़ा तथा संघर्ष का रूप कभी आर्थिक रहा तो कभी सामाजिक और व्यक्तित्व। निरला में वह अद्भुत शक्ति थी जिसने उन्हें फौलादी बनाया एवं महाप्राण निराला को गौरव प्रदान किया उनकी संवेदना मे विराट एवं महान को संस्पर्श नही किया अपितु उपेक्षित, दलित, शोषित, लधुमानव को भी साहित्य में प्रतिष्ठित किया। निराला का साहित्य विविध आयामी है जिसमें अमूल्य – मानवीय जीवन की विधियां भरी पड़ी हैं। उन्होंने अपने साहित्य में जो कुछ भी सृजा है वह निराला के समान ही महान और अपरिपेय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राग–विराग–निराला – सम्पादक – डॉ0 राम विलास शर्मा
2. क्रान्तिकारी कवि निराला – डॉ0 बच्चन सिंह
3. प्रसाद निराला अज्ञेय – प्रो0 रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. तीन शिखर कृतियां – कुमार विमल
5. निराला की काव्यभाषा – डॉ0 रेखा खरे
6. हिन्दी साहित्य कोष – भाग 1